Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

ग्रामीण अंचल में जनसंचार का स्वरूप

डॉ. मनोज कुमार गौतम*

सूचना ही शक्ति है तथा संचार लोगों को सूचनाओं से सुसज्जित करने मे अहम् भूमिका निभाता है। विकासात्मक संचार ऐसे विकास के लिए कार्य करता है जो सहभागिता और विकेन्द्रीकरण पर आधारित है। यह सहभागिता और विकेन्द्रीकरण नियोजन नीतियों के निर्माण में भी सहायक हो सकता है, इसे शिक्षा प्रसार के क्षेत्र में भी अपनाया गया था किन्तु इस क्षेत्र में सहभागिता समाप्त हो गयी थी। सामाजिक विकास के निचले पायदान पर बैठे ग्रामीण लोगों मे अधिकांश को तो यहीं मालूम है कि संचार के माध्यमों का काम सिर्फ लोगों का मनोरंजन करना है। लेकिन ग्रामीण अंचलों में अब चौपाल, कृषि दर्शन, एवं स्थानीय समस्याओं पर निर्मित कार्यक्रमों के द्वारा इन्हे आभास होने लगा है कि इनसे केवल मनोरंजन ही नही बल्कि जानकारी भी मिलती है इसी कारण लोगो का ध्यान आकर्षित होता है।[1]

"जनसंचार का अर्थ सूचना, विचारों और मनोरंजन का संचार के साधनों से व्यापक प्रसार करना है। इनमें ऐसे माध्यम हैं, जो जनसंचार के आधुनिक उपकरणों का उपयोग करते हैं, जैसे– रेडिया, टेलीविजन, सिनेमा, समाचार पत्र–पत्रिकाएँ और विज्ञापन आदि। इनके साथ–साथ पारम्परिक माध्यम जैसे– लोकगीत, लोकनृत्य, नाटक, रामलीला, कठपुतली आदि का उपयोग भी इसी श्रेणी में आता है। जनसंचार दो शब्दों से मिलकर बना है। जन अर्थात जनता, जो बिना किसी धर्म, रंग, लिंग आदि की होती है। संचार का अर्थ है, विचारों व संदेश को जनता तक पहुँचाना।[2]

संचार; मानव समाज की एक आधारभूत प्रक्रिया है। परम्परागत रूप से मानव शब्द, भाषा, लिपि एवं प्रतीकों के माध्यम से अपनी इच्छा, आवश्यकता, मनोभावों एवं विचारों का संप्रेषण करता रहा है। जैसे–जैसे मानव सभ्यता का विकास होता चला गया, वैसे–वैसे संचार की प्रक्रिया अधिक विस्तृत किन्तु जटिल होती चली गई। संचार के अभाव में संस्कृति एवं सभ्यता की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। संचार की प्रक्रिया ने ही मानवीय सम्बन्धों एवं अन्तर्क्रियाओं को सम्भव बनाया है।

संचार वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा समाजों के बीच की बाधाएँ दूर हो जाती हैं तथा व्यक्तियों के बीच की बाधाएँ खत्म हो जाती है। संचार वह स्रोत भी है, जिसके द्वारा सामाजिक सीख एवं समझदारी का विकास होता है, तथा विकास एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके कारण सरल समाज एक विकसित समाज के रूप में परिवर्तित होता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक विकास के कारण इस समाज में शिक्षा के स्तर, सामाजिक

* असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, म.गां.काशी विद्यापीठ–एन.टी.पी.सी. परिसर, शक्तिनगर, सोनभद्र

गतिशीलता नगरीकरण की दर तथा राजनैतिक दृष्टिकोण में उल्लेखनीय परिवर्तन होता है। इसलिए संचार ग्रामीण सामाजिक प्रक्रियाओं की आधारशिला एवं संज्ञानात्मक प्रक्रिया है। संचार उस प्रक्रिया को भी कहते हैं, जिसमें स्रोत एवं श्रोता के बीच सूचना सम्प्रेषण होता है। इस प्रकार संचार, विचारों के आदान–प्रदान से सम्बद्ध है।

जनसंचार के माध्यमों का धीरे–धीरे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली विकास हुआ है। सबसे प्रथम बातचीत के संचार के प्रणाली को अपनाया गया। कोई एक व्यक्ति किसी एक व्यक्ति को काई बात बताता है, दूसरी तीसरे को, इस प्रकार बात से प्रसार होता है। 'इण्लैंड के जार्ज पटोफोरस' संचार के विशेषज्ञ थे। उनका विचार था कि जब दो व्यक्ति आपस में बात करते हैं तो बात बढ़ती चली जाती है। यह संदेश के प्रसार का सशक्त ढंग है यदि बात 10 या 20 व्यक्तियों में कही जाये, तो वह सैकड़ों व हजारों लोगों तक पहुँच जाती है। बोलना, भाषण, जनसंभाएँ संचार की सबसे प्रथम प्रणाली है। इसके पश्चात् पारम्परिक या ग्रामीण संचार ने अपना स्थान बनाया। पहले अधिकांश जनता अपनढ़ होती थी, अतः जो बात बोलकर बताई जाय, उसका प्रभाव अधिक पड़ता था। अमेरिका में कठपुतलियों या खेल–तमाशों से संदेश प्रसारित किया जाता था। इनके द्वारा लोगों को शिक्षा दी जाती थी, फिर धीरे–धीरे संचार के साधनों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आता गया।[3]

पूर्व में ऊँट, घोड़े जैसे जानवरों का यातायात के साधन के रूप में प्रयोग करके संदेश पहुँचाये जाते थे। लेकिन आज रेल, हवाई जहाज उड़ने लगे है और नगाड़ों तथा मुनादी का स्थान रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र–पत्रिकाएँ, लोकसम्पर्क संस्थाएँ, विज्ञापन की संस्थाएँ, इश्तिहार, पुस्तकों, पर्चों तथा खोज विभाग ने ले लिया है। इससे चित्र उच्च प्रौद्योगिकी तथा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रान्ति हुई है। सेटेलाइट, कम्प्यूटर, ई–मेल, मोबाइल आदि ने तत्काल सूचना पहुँचाने का ग्रामीण क्षेत्र में आश्चर्यजनक सुविधा उपलब्ध करा दी है।

विभिन्न विद्वानों ने जनसंचार को अपने–अपने दृष्टिकोण से परिभाषित भी किया है, जो अधोलिखित है–

एशले, मौंटगु व फ्लोयड मैंटसन ने अपनी पुस्तक "द ह्यूमन कम्यूनिकेशन" में कहा है – "वह असंख्य ढंग जिनसे मानवता से सम्बन्ध रखा जा सकता है, शब्दों या संगीत, चित्रों या मुद्रण द्वारा, इशारों या अंग प्रदर्शन, शारीरिक मुद्रा या पक्षियों के परों से, सभी की आँखो तथा कानों तक संदेश पहुँचाना ही जनसंचार कहलाता है।"[4]

जार्ज ए0 मिलर ने "लैंग्वेज एण्ड कम्यूनिकेशन" में कहा है कि जनसंचार का अर्थ सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना है।"

प्रो0 लक्ष्मण राव, (पूर्व निदेशक भारतीय संचार) ने जनसंचार को स्पष्ट करते हुए कहा कि, "जनसंचार इस प्रकार का हो, जिसे जनता आसानी व सुविधा से बिना किसी कठिनाई को समझ सकें।"

रीवर्स, पीटरसन तथा जनसन ने "द मास मीडिया एण्ड गार्डन सोसायटी" में तथा अन्य विद्वानों ने जनसंचार की विशेषताएं बताते हुए लिखा है कि– "जनसंचार की यह विशेषता है कि यह साधारण जनता के लिए होता

है। जनसंचार अपना संदेश दृश्य तथा श्रव्य दोनों साधनों से प्रकट करता है। दृश्य साधन में टेलीविजन, सिनेमा तथा श्रव्य साधन मे रेडिया आता है। जनसंचार की अन्य विशेषता यह है कि संचार अपना संदेश तीव्र गति से पहुँचाता है। रेडियो, टेलीविजन तथा समाचार–पत्रों के माध्यम से तीव्र गति से संदेश जनता तक पहुँचाया जाता है। जो संदेश या विचार जनता को देना होता है, वह बहुत स्पष्ट, सारगर्भित, संक्षिप्त तथा सरल भाषा में होता है।[4]

आधुनिक युग में संचार ग्रामीण क्षेत्रों में लोकप्रिय तथा प्रचलित माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। जनसंचार का एक गुण यह भी होता है कि यह आम जनता के लिए होता है। जनसंचार की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें लोगों की प्रतिक्रिया का पता चलता है। इसके अतिरिक्त जनसंचार अल्प मूल होता है अर्थात सरकार या संस्था को तो व्यय करना पड़ता है लेकिन जनता को बहुत कम खर्च करना पड़ता है। रेडियो पर जनता सुविधापूर्वक और कम मूल्य पर अधिक से अधिक मनोरंजन तथा सूचनाएँ प्राप्त करती हैं।

संचार ग्रामीण समाज की अनिवार्य आवश्यकता है। संचार के अभाव में न मानव समाज का विकास हो सकता है, और न ही सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था का निर्माण, क्योंकि संचार के अभाव में व्यक्ति का संचार सीमित एवं संकुचित हो जाता है यद्यपि परम्परागत भारतीय ग्रामीण समुदाय में संचार के साधनों का प्रचलन अत्यधिक सशक्त एवं ग्रामीण मानसिकता के अनुरूप रहा है तथापि परिवर्तन और विकास के संदर्भ में संचार साधनों की क्रियाशीलता ग्रामीण समुदाय के संदर्भ में अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है।

इस प्रकार समकालीन ग्रामीण समुदाय परिवर्तन्नोमुखी समुदाय है वर्तमान में विकास और परिवर्तन की अनेक योजनाएँ ग्रामीण पुनर्निमाण के लिए क्रियान्वित की जा रही है तथा दूसरी तरफ संचार के नवीन साधन विशेषकर "इलेक्ट्रानिक मीडिया" का विस्तार भी हो रहा है, जिसके कारण ग्रामीण समुदाय अप्रत्यक्ष रूप से वाह्य संचार के सम्पर्क में आ गया है। समकालीन ग्रामीण व्यक्ति की सूचना अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत हो रही है। आज सूचना सम्प्रेषण के नवीन साधनों तथा सामाजिक, राजनैतिक जीवन में ग्रामीण व्यक्ति की सहभागिता से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण आवश्यक है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर इस लेख में ग्रामीण क्षेत्र में संचार के साधनों के स्थायित्व और निरन्तरता तथा ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के सन्दर्भ में सूचना सम्प्रेषण के नवीन साधनों की प्रभावशीलता से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

अतः स्पष्ट होता है कि संचार क्रान्ति ने दुनियां में नयी जान फूँक दी है। जनसंचार के अत्याधुनिक साधन ग्रामीण समाज के प्रमुख निर्वाहक है। ये दुनियां के एक कोने से दूसरे कोने तक तत्काल सूचनाएँ पहुँचा रहे हैं। इस क्रम में राष्ट्र–राज्य की सीमाएँ गौड़ हो गयी हैं। विश्व एक ग्राम बन गया है। सूचना औद्यागिकी का विश्व स्तर पर एकीकरण हुआ है। इसके अधिकाधिक प्रयोग से विशेष रूप से "इण्टरनेट" के तीव्र विस्तार के फलस्वरूप

विभिन्न क्षेत्रों में मानव गतिविधियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। इसका प्रभाव ग्रामीण समाज, अर्थव्यवस्थाओं, राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक व्यवस्था एवं प्रशासनिक आदि समस्त व्यवस्थाओं पर व्यापक रूप से पड़ा है। व्यापारिक तथा वाणिज्यिक गतिविधियों मे इस नयी संचार सूचना प्रौद्योगिकी ने उल्लेखनीय विकास का मार्ग प्रशस्त किया है।[6]

सन्दर्भ

1. कुरूक्षेत्र; मासिक पत्रिका: वीणा जैन, निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सी.जी.ओ. काम्प्लेक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली, फरवरी–2006, पृ. 27.
2. शर्मा, राधेश्याम : जनसंचार, हरियाणा साहित्य अकादमी चण्डीगढ़, द्वितीय संस्करण, 1993, पृ0 138–139.
3. पारख, जवरी मल्ल : जनसंचार माध्यमों का सामाजिक चरित्र, अनामिका, प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. एशले, मौटगु व फ्लोमड मैंटसन : द ह्यूमन कम्यूनिकेशन.
5. रीवर्स, पीटरसन व जनसन : द मास मीडिया एण्ड सोसायटी.
6. पाण्डेय, प्रो0 रवि प्रकाश : वैश्वीकरण एवं समाज, शेखर प्रकाशन, 101 जीरो रोड, इलाहाबाद, 2005, पृ0–107–108.